शरद सिंह का कथा साहित्य : एक अनुशीलन

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रुपरेखा

शोधकर्ता

बादेवाड राम पिराजी

एम.ए.,एम.फिल (हिन्दी)

शोध निर्देशक

प्रा.डॉ.सूर्यवंशी जयराम श्रीराम

सहाय्यक प्राध्यापक

श्री संत गाडगे महाराज महाविद्यालय, लोहा जि.नांदेड

अनुसंधान केंद्र पीपल्स कॉलेज, नांदेड

जुलाई २०२२

भूमिका :

वर्तमान समय की सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों को अभिव्यक्त करने की दृष्टि से गद्य साहित्य विशेष सुलभ दिखाई देता है। परिणामस्वरुप आम पाठक गद्य साहित्य की और आकर्षित हो रहे हैं । इस कारण मैंने भी गद्य साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा उपन्यास को अध्ययन तथा अनुसंधान के लिए चुना है ।

समकालीन हिंदी उपन्यासकारों में अपनी सजग सामाजिक चेतना के कारण विशेष स्थान पानेवाली लेखिका डॉ.शरद सिंह हिंदी महिला साहित्य की महत्वपूर्ण उपन्यासकार कवयित्री, लेखिका एवं चिंतक है। उनके लेखन, चिंतन के केंद्र मे समाज के बुनियादी सरोकारो पर विशेष ध्यान दिखाई देता है। डॉ.शरद सिंह जी दलित समाज एवं महिलाओं का उत्थान चाहती है परिणास्वरुप उनके साहित्य में दलित समाज, दलित स्त्री तथा हाशिए पर रहे लोगों का यथार्थ जीवनदर्शन दृष्टिगत होता है। इसके अलावा उपन्यासकार डॉ.शरद सिंह ने आदिवासी जीवनपर भी प्रकाश डाला है।

मैंने एम फिल (हिंदी) उपाधि हेतु डॉ.सुशीला टाकभौरे कृत काव्यसंग्रह 'हमारे हिस्से का सूरज : एक अनुशीलन' इस विषय पर अनुसंधान किया था। उसी अनुसंधान की अगली कडी के रुप में आज पीएच.डी हेतु डॉ.शरद सिंह जी के उपन्यासो में व्यक्त स्त्री, दलित एवं आदिवासी जीवन को समझने की कोशिश करूंगा।

विषय चयन की प्रेरणा एवं महत्व :

साहित्य पढने का हर व्यक्ती का उद्देश अलग अलग होता है। कोई मनोरंजन के लिए पढता है, कोई ज्ञान प्राप्त करने के लिए, तो कोई समय बिताने के लिए। पर मैंने जब डॉ.शरद सिंह जी का उपन्यास साहित्य पढा और उनके साहित्य के अंतरंग को जाना तो मुझे एक अलग जीवनदर्शन का पता चला। डॉ.शरद सिंह का उपन्यास 'पिछले पन्ने की औरतें' पढा तो मुझे पता चला की प्रस्तुत उपन्यास में सदियों से उपेक्षा, विपन्नता और दैहिक शोषण की शिकार बेडिया समुदाय की स्त्रियों का संघर्ष प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया

गया है। डॉ.शरद सिंह के अन्य उपन्यासों में भी इसी प्रकार उपेक्षित, शोषित जनजीवन दर्शन अभिव्यक्त हुआ है ।

इस कारण डॉ.शरद सिंह जी के साहित्य को पढना, समझना, परखना और उसमें चित्रित नारी जीवन, आदिवासी जीवन, देह व्यापार, जीवन संघर्ष, समाज जीवन का विवेचन प्रस्तुत करना मुझे आवश्यक लग रहा है। तत्पश्चात अनुसंधान कार्य के लिए मैने 'डॉ.शरद सिंह का उपन्यास साहित्य : एक अनुशीलन' इस विषय का चयन करने के लिए मेरे शोध निर्देशक प्रा.डॉ.जयराम सुर्यवंशी सर से चर्चा की और उन्होंने तुरंत ही इस विषय पर शोध कार्य करने की अनुमती दी ।

अनुसंधान की पद्धतियाँ :

ज्ञान कोष इतना विस्तृत और अखंड है की, इसे समग्र रुप से प्राप्त नही किया जा सकता, इसलिए अध्ययन हेतु उसे छोटे छोटे भागो में विभागित कर ज्ञान संग्रह करना पडता है । ठिक उसी तरह प्रस्तुत शोधकार्य की व्यापकता को देखकर इसे पुरा करने की लिए निम्न अनुसंधान पद्धतीयों का सहारा लिया जाएगा ।

१) आलोचनात्मक शोध पद्धति

२) तुलनात्मक शोध पद्धति

३) व्याख्यात्मक शोध पद्धति

४) साक्षात्कार शोध पद्धति

५) मननात्मक शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध कार्य विश्वविद्यालय के निश्चित समय सीमा में रहकर ही पुरा किया जाएगा। साथ ही पढने के पश्चात ही इस विषय पर चिंतन किया जाएगा। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य को अध्ययन की सुविधा के लिए सात अध्यायों में विभाजित किया है जो निम्नवत है ।

प्रथम अध्याय :

शरद सिंह व्यक्तित्व एवं कृतित्व

व्यवहार में सरल, सहज, मिलनसार एवं आकर्षक व्यक्तित्व की धनी लेखिका डॉ.शरद सिंह का जन्म मध्यप्रदेश के एक छोटे से जिले 'पन्ना' में २९ नवम्बर १९६३ को हुआ । जब वे साल भर की थी तभी उनके सिर से उनके पिता श्री रामधारी सिंह का साया उठ गया। उनका तथा उनकी बडी बहन वर्षा सिंह का पालन पोषण उनकी माँ विद्यावती सिंह क्षत्रिय ने किया। डॉ.शरद सिंह जी के नाना संत श्यामचरण सिंह शिक्षक होने के साथ ही गांधी वादी स्वतंत्रता सेनानी थे। डॉ.शरद सिंह जी अभितक अविवाहीत रही है ।

कृतित्व :

डॉ. शरद सिंह जी ने बाल्यवस्था से ही लेखन कार्य शुरु कर दिया । कहानी, कविता, उपन्यास, गजल इस साहित्य विधा में अपना लेखन कार्य किया ।

उपन्यास

उपन्यास :

१. पिछले पन्ने की औरतें : बेड़िया समुदाय की स्त्रियों के जीवन पर आधारीत उपन्यास प्रकाशन - २००५
२. पचकौडी- सामाजिक विसंगतीयों के कारण मानसिक दैहिक शोषण का शिकार का चित्रन किया है । प्रकाशन-२००९
३. शिखंडी...... स्त्री देह से परे प्रकाशन-२०२०
४. कस्बाई सिमोन उपन्यास में लव इन रिलेशन पर आधारीत है प्रकाशन-२०१२

कहानी संग्रह :

बाबा फरीद अब नही आते, तीली-तीली आग, छीपी हुई औरत, गिल्ला हनेरा, राख्र तरे के अंगरा

इतिहास ग्रंथ :

खजुराहो की मुर्तिकला के सौंदर्यात्मिक तत्व प्रचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास.

आदिवासी जीवनपर लेख्रन कार्य (मध्यप्रदेश)

द्वितीय अध्याय :

शरद सिंह का समकालीन महिला कथाकारों में स्थान

भारतीय साहित्य जगत में आधुनिक युग के प्रारंभ से ही पुरुषों के साथ महिलाएं भी लेख्रन को प्राथमिकता दे रही हैं । बीसवी सदी के पुर्वाद्ध में महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी रचनाधर्मिता के साथ उभरकर आई। समकालीन दौर में महिला उपन्यासकारों की रचनाओ में नारी चेतना, शोषण, आपसी मतभेद आदी सवालों के साथ दलित, आदिवासी एवं मजदुर समाज संबंधी समुदाय के साथ भुमिहीन मजदुर या किसान और उनकी औरतें आदि के चित्र समकालीन लेख्रीकाओं ने अपने उपन्यासों में चित्रित किए हैं ।

डॉ.शरद सिंह ने अपने चार उपन्यासों में स्त्री एवं आदिवासी जीवन पर गहन चिंतन किया हैं । डॉ.शरद सिंह के समकालीन उपन्यासकारों में मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा ख्रेतान, गितांजली श्री, मधु कांकरिया, जयंती रंगनाथन, नासिरा शर्मा, चित्र मुद्गल, डॉ.सुशिला टाकभोरे, डॉ.वर्षा सिंह आदि प्रमुख्र हैं । इन उपन्यासकारों ने स्त्री की समस्या संघर्ष और निती मानकर उसे स्वीकार करने वाली स्त्रीयों के विषय में अपने उपन्यासों के माध्यम से लेख्रन किया है ।

इन महिला लेखिकाओं के साथ-साथ डॉ.शरद सिंह जी के उपन्यास साहित्य का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। जिसे प्रस्तुत अध्याय के माध्यम से देखा जाएगा।

तृतीय अध्याय :

शरद सिंह के उपन्यास साहित्य में व्यक्त स्त्री विमर्श

डॉ.शरद सिंहजी ने अपने उपन्यास 'पिछले पन्ने की औरतें' और 'पचकौडी' जैसे बहुचर्चित उपन्यासों के माध्यम से उन औरतों के बारे में लिखा है जो समाज में रही किंतु उनकी नियति सफेदपोश समाज की अन्य औरतों की भांति नही है ।

अछुत विषयों पर अपने लेखन के लिए चर्चित रही इस युवा लेखिका ने एक बार फिर नए विषय को विश्लेषणात्मक ढंग से सामने रखते हुए उन औरतों की समस्या को उजागर किया है। 'पिछले पन्ने की औरतें' इस उपन्यास में जिन औरतों को पात्र के रूप में रखा गया है वे सदियों से सामाजिक उपेक्षा, आर्थिक विपन्नता और दैहिा शोषण को अपनी नियती मानकर सहती आ रही है। वे बेडनियों के नाम से कहलायी जाती है । वें जिस समुदाय से है उस समाज का नाचना गाना ही जीविकोपार्जन का साधन था ।

'पचकौडी' उपन्यास में सामाजिक विसंगतियों के कारण हुए स्त्रियों के शोषण का चित्रण लेखिका करती है ।

कस्बाई सिमोन यह उपन्यास 'लिव इन रिलेशन' पर लिखा गया उपन्यास हैं यह उपन्यास स्त्रियों की समस्याओं को उजागर करता हैं।

चतुर्थ अध्याय :

शरद सिंह के उपन्यास साहित्य में व्यक्त आदिवासी जनजीवन

डॉ.शरद सिंहजी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से आदिवासी साहित्य पर काफी लिखा हैं। उसमें भारत के आदिवासी क्षेत्रो की लोककथाएं, मध्यप्रदेश का आदिवासी जीवन और आदिवासियों का संसार, आदिवासियों के देवी देवताएं, आदिवासी जीवन की वेशभुषा, आदिवासी परंपराओं पर विपुल लेखन किया है ।

अत: प्रस्तुत अध्याय में आदिवासी जीवन पर लिखे शरद सिंह जी के उपन्यास 'पिछले पन्ने की औरतें' और 'पचकौडी' इस चर्चीत उपन्यासों में आदिवासी जीवन रेखांकित किया है ।

पंचम अध्याय :

शरद सिंह के उपन्यास साहित्य में व्यक्त किन्नर विमर्श

शरद सिंह का बहुचर्चित उपन्यास 'शिखंडी...... स्त्री देह के परे' महाभारत महाकाव्य के चरित्र शिखंडी पर एक नए पहलु के साथ तृतीय पंथीयों को केंद्र में रखकर इस उपन्यास की रचना हुई। इस तृतीय पंथीयों के जीवन पर प्रकाश इस अध्याय के माध्यम से डाला जाएगा ।

षष्ठ अध्याय :

शरद सिंह के उपन्यास साहित्य का भाषा तथा शिल्पगत अध्ययन

हाशिए पर खडे आदिवासी जीवन के सर्वाधिक सन्निकट होने के कारण समकालीन दौर में शरद सिंह के उपन्यासों का महत्व बढ रहा है। उन्होने अपने उपन्यासों में नारी, दलित, आदिवासी जीवन के विभीन्न अंगो को अपनी भाषा में चित्रीत किया है। जो सहज और सरल है।

इसी अध्याय के अंतर्गत शरद सिंह के साहित्य भाषा तथा शिल्पगत अध्ययन किया जाएगा । क्योंकि भाषा भावों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है। तो शिल्प विधा का शरीर होता है । अत: शरद सिंह के साहित्य का भाषा तथा शिल्पगत अध्यायन प्रस्तुत अध्याय में किया जाएगा ।

सप्तम अध्याय :

उपसंहार एवं उपलब्धियाँ

प्रस्तुत अध्याय में शोध प्रबंध के उपलब्ध निष्कर्षो को प्रस्तुत कर समग्र मुल्यांकन किया जाएगा। साथ ही अनुसंधान की उपलब्धियों तथा अध्ययन की नई दिशाएँ प्रस्तुत की जाएगी। और अंत में आधार ग्रंथ और संदर्भ ग्रंथ की सुची दी जाएगी ।

संदर्भ ग्रंथ सुची :

उपन्यास

१. पिछले पन्ने की औरतें - डॉ.शरद सिंह सामाईक प्रकाशन दिल्ली, प्र.सं.२००५

२. पचकौडी - डॉ.शरद सिंह, सामाईक प्रकाशन दिल्ली प्र.सं.२००९

३. कस्बाई सिमोन-डॉ.शरदसिंह सामाईक प्रकाशन दिल्ली प्र.सं.२०२०

४. शिखंडी...... स्त्री देह के परे सामाईक प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं.२०२०

कहानी संग्रह : १) तीली - तीली आग - डॉ.शरद सिंह

२) राख्र तरे अंगारे - डॉ.शरद सिंह

१) साहित्य सागर मध्यप्रदेश चॅनल द्वारा लिया डॉ.शरद सिंह का साक्षात्कार

२) आदिवासी दिवस पर डॉ.शरद सिंह का भाषण

शोधकर्ता

बादेवाड राम पिराजी

एम.ए.एम.फिल (हिन्दी)

शोध निर्देशक

प्रा.डॉ.जयराम श्रीराम सूर्यवंशी

सहाय्यक प्राध्यापक

श्री संत गाडगे महाराज महाविद्यालय,

लोहा जि.नांदेड

अनुसंधान केंद्र पीपल्स कॉलेज, नांदेड